घोघरडीहा प्रखंड स्वराज्य विकास संघ जगतपुर,मधुबनी,बिहार

मेघ पाईन अभियान

जल जमाव क्षेत्र में भी गरमा धान की खेती संभव

केस स्टडी वर्ष 2010

गॉव की स्थिति

कमला नदी के तट पर बसे बलिया गॉव प्रायः किसी न किसी आपदा जैसे बाढ़–सुखाड़ से प्रभावित होता रहा है जिसके कारण यहॉ का जिविका का मुख्य साधन कृषि एव मछली पालन नष्ट हो जाता हैं जिसके कारण यहॉ के अधिकतर गरीब मजदूर एवं छोटे किसान पलायन कर पंजाब एवं हरियाना मजदूरी करने चले जाते हैं प्रायः बाढ़ के समय जुलाई से दिसम्बर तक यह लोग बाहर ही मजदूरी करते हैं क्योंकि यह समय यहॉ या तो बाढ़ या सुखाड़ पर जाने के कारण इललोगों का जिविका चलाना मुश्किल होा जाती है। यहॉ पानी का स्थिति ऐसा हो जाता हे कि बाढ़ के कारण जमीन में बालु भर जाता है तथा फसल नष्ट हो जाता है एवं सुखाड़ के कारण मेहनत करने बाद भी पैदावार नहीं होता है । यहॉ तक कि यहॉ पानी भी दूषित हो जाते हे। मनुष्य को पीने का स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं हो पाता है।

परिचयः–

नाम–सफुलिया खातून पति श्री बिहारी कुजरा उम्र–65 वर्ष, ग्राम–बलिया, पंचायत–बलिया,जिला–मधुबनी ,बिहार के रहने बाली निरक्षर गरीब एवं भूमिहिन महिला है। इनके परिवार में कुल 24 सदस्य हैं। परिवार के सभी सदस्य साल के 6 महीने पंजाव/हरियाणा में मजदूरी एवं अन्य समय गॉव में तथा आस–पास मजदूरी करके अपना जीविका किसी तरह चलाते हैं । इनके पास जमीन नहीं होने पर भी ये कृषि से काफी लगाव रखते हैं तथा बटाई लेकर कुछ खेती करते हैं परन्तु बार–बार आपदा से प्रभावित होकर यह बटाईदारी भी छोड़ दी और मजदूरी करने लगी।

प्रयासः—

जी पी एस भी एस एवं मेघपाईन अभियान के द्वारा संचालित समग्र जल प्रबंधन कार्यक्रम 2007 में इस गॉव में शुरू किया गया। विभिन्न जनचेतना मूलक कार्यक्रम के दौड़ान 4.2. 07 को यहॉ एक ग्राम समिति बनाया गया जिसका अध्यक्ष सफुलिया देवी को ग्रामीण ने बनाया तथा प्रत्येक महीना एक बैठक के द्वारा जल से होने बाले परेशानी एवं उसका उपाय पर बिचार कर के निर्णय इस बैठक में लिया। बैठक में जब शुद्ध जल सेवन संबंधी वर्षा जल,मटका फिल्टर इत्यादि पर चर्चा हो रही थी तो सफुलिया देवी कही जो आपलोग सिर्फ पानी पीने का हीं बात बताते हैं । इस परिस्थिति में भोजन का कैसे प्रबंध होगा।इस पर कोई बात नहीं करते हैं और सिर्फ पानी पीने से हीं व्यक्ति जिवित नहीं रह सकता।यह बात सुनने के बाद एम पी ए एवं जी पी एस भी एस के कार्यकर्त्ता ने इनलोगों को कम पानी से सुखा एवं बाढ़ आने से पहले एस आर आई पद्धति द्वारा खेती करने की बात कही जिसपर वे तैयार हो गये । फिर इन्हें एस आर आई विधि पर खेती का प्रशिक्षण दिया गया। ये एस आर आई पर खेती के लिए प्रशिक्षण में इन्हें किस तरह पानी का प्रयोग ,खाद का प्रयोग,रोपाई एवं सिंचाई संबंधी विभिन्न विधि का प्रशिक्षण दिया गया। किस जमीन में कितना पानी,कितना खाद एवं कितनी दूरी पर बीज लगाना चाहिए एवं कितनी दिनों में इसकी कटाई होना चाहिए। एस आर आई विधि द्वारा गरमा धान की खेती की जानकारी हो गयी।

सफलताः—

प्रशिक्षण लेने के बाद सफुलिया देवी एक कट्ठा बंजर जमीन लीज पर ली फिर भी जनवरी 2008 में बीज स्थली के लिए 4 धूर में जुताई कर इसमें कम्पोस्ट, 400 ग्राम डी ए पी, 200 ग्राम , पोटास 100 ग्राम एवं जिंक मिलाकर उस जमीन में क्यारी बनाकर तथा चारोंतरफ दो इंच नाला बनाकर तैयार किया। फिर 1 किलो गरमा धान का बीज लेकर इसे 7 लीटर पानी में एक अंडा डालकर बीजोपचार किया। सभी प्रक्रिया पूरी होने के बाद गर्म स्थल पर इसे अंकुरण के लिये डाला गया। जब दूसरे दिन बीज पूर्णतः अंकुरित हो चुका था तो उसे क्यारी में बराबर की पंक्ति बनाकर उस बीज को छीट दिया गया।फिर उसे पूराने पुआल से ढ़क दिया गया।फिर बांकी बचे जमीन को कम्पोस्ट 60 से 70 क्विन्टल डाला गया, फिर प्रति कट्ठा के हिंसाब से एक किलो ग्राम डी ए पी, 500 ग्राम पोटास,200 ग्राम जिंक डालकर पूरे खेत को तैयार किया। फिर दस दिन के बाद बोरिंग से पटवन कर उसमें फ्यूराडान 200 ग्राम डालकर तैयार किया तथा प्रत्येक 10 फीट पर नाला बना दिया गया एवं उस बीज को सावधानी से जमीन से निकालकर 10 इंच की दूरी पर समानतर रोपाई किया गया। फिर 8 दिन बाद 500 ग्राम यूरीया से छिड़काव किया गया। फिर तेजी से पौधा में विकास होने लगा तथा इसकी हल्की सिंचाई कर 20 दिन बाद इसमें सारे खड़—पतवाड़ निकालकर यरिया 500 ग्राम प्रति कट्ठा के दर से छिड़काव किया गया।फिर 35 दिन बाद सिंचाई कर इसमें निकाई—गुराई कर दिया गया। समय—समय पर पानी के अभाव होने पर हल्की सिंचाई भी किया गया। कीट प्रबंधन के लिए बी ए सी 10 प्रतिशत डस्ट का भी प्रयोग किया। 120 दिन के बाद जब यह धान पक कर तैयार हुआ फिर इसे कटाई कर इसे तैयार किया गया। तब यह प्रति कट्ठा

1क्विन्टल 5 किलो के दर से 10 कट्ठा में 10 क्विन्टल 50 किलो तैयार हुआ। उस समय इसकी कीमत 9450.00 रूपया हुआ। जबकि इसको खर्च –

रासायनिक खाद– 600.00
दवा – 200.00
बीज– 15.00

जुताई,मजदूरी एवं सिंचाई– 3400.00
कुल लागत– 4215.00 रूपये

कुल बचत – 5235.00 रूपये

यह बात सुनकर छोटे–बड़े किसान अपने एवं अन्य दूसरे गॉव से भी आये तथा इस पद्धति को जाने।

चुनौतीः–

परम्परागत तथा जैवउर्वरक के बीच संतुलन स्थापित करना

समस्या– समय पर पंपसेट का व्यवस्था नहीं होने से सिंचाई नहीं हो पाना।

उपलब्धि–

1. छोटे –बड़े किसान इस विधि द्वारा गरमा धान कम समय में जलजमाव वाले क्षेत्र में भी खेती किये जा सकते हैं।
2. कम पानी में अधिक उपज प्राप्त किया जा सकता है।
3. यह बाढ़ आने से पूर्व भी इस विधि से खेती किया जा सकता है।
4. कम लागत में अधिक उपज ।
5. इस विधि से खेती करने पर जो नार पुआल प्राप्त होती है उससे आपदा के समय में पशु के चारा की पूर्ति होती है।
6. यह पद्धति कि जानकारी लेने दूर–दूर से भी छोटे–बड़े किसान आते हैं तथा जानकारी लेकर इसे अपनाते हैं।

सीखः– किसान इस विधि द्वारा कम पानी और कम लागत से खेती कर अधिक उपज प्राप्त कर सकता है।

.